आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 19/11/2022; Accepted: 21/11/2022; Reviewed: 17/12/2022 Published: 24/12/2022

“कमलकुमार की कहानियों में अभिव्यक्त आधुनिकताबोध”

- करुणालक्ष्मी.के.एस.
सहायक प्राध्यापिका
सरकारी महाविद्यालय, बेट्टंपाडी

करुणालक्ष्मी.के.एस, “कमलकुमार की कहानियों में अभिव्यक्त आधुनिकताबोध”, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022, (279-286)

शोध सार – **कमलकुमार आधुनिकता को उसकी व्यापकता में चित्रित करने में सिद्धहस्त लेखिका हैं। बहुश्रुत लेखिका कमलकुमार के कथासाहित्य में विषय वैविध्यता है – स्वतंत्र नारी के मनोलोक का अनावरण है, नारी जीवन की त्रासदी है, किन्नरों की व्यथा है, आधुनिकता की आँधी से बदले हुए जीवन मूल्य और संबंधों का अनावरण है, स्त्री पुरुष के संबंध हैं, अजनबीपन की पीड़ा है, अनाथबोध तथा विस्थापन की तड़प है। समाज की स्थापित व्यवस्था के प्रति विद्रोह है, अपने परिसर तथा सृष्टि के प्रति संवेदना है। कमलकुमार का कथासाहित्य केवल एक थीम पर रचित न होकर अपनी व्यापकता में आधुनिकता के कई अंशों को समेटते हुए आधुनिक परिवेश का यथार्थ चित्रण अंकित करता है। कमलकुमार जी के कथासाहित्य में आधुनिकताबोध के बिंदुओं को पहचानना, आधुनिकता की अवधारणा पर चर्चा करना, आधुनिकताबोध पर ख्यात लेखकों के अभिमत का अवलोकन करना इस शोध आलेख का उद्देश्य है।**

मुख्य शब्द – **आधुनिकताबोध, प्रश्नमूलक मानसिकता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, पुनर्मूल्यांकन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, कल्चरल शॉक।**

आधुनिकता एक जीवनदृष्टि है, जो समय के अनुरूप बदलती रहती है। वह स्थापित मूल्यों के प्रति विद्रोह करके युगसम्मत नवीन मूल्यों की स्थापना करती है। यह प्रश्नमूलक मानसिकता को प्रश्रय देती है, हर विषय को तर्क की कसौटी पर कसकर ही आधुनिकता स्वीकार करती है। आधुनिकताबोध एक संकीर्ण अवधारणा है, जिसके अनेक आयाम हैं, आधुनिकता और

आधुनिकताबोध को 'इदमित्थं' कहकर परिभाषित करना आसान नहीं है। आधुनिकता किसी एक जाति, धर्म, मूल्यों का पक्षपाती नहीं है। यह समष्टि से व्यष्टि को प्रमुखता देने के माध्यम से व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थन करती है। विभिन्न विद्वानों, रचनाकारों ने विभिन्न रीति से आधुनिकता को ग्रहण किया है, परिभाषित किया है। उन परिभाषाओं के आलोक में आधुनिकताबोध की अवधारणा स्पष्ट होती है। अपने कथासाहित्य के बारे में कमलकुमार स्वतः यह टिप्पणी करती हैं, " हमने मन्नू जी से लेकर आज तक के कहानीकारों का समय देखा है, देखा क्या है, उसमें जी रही हूँ, उसे जिया है, उसमें लिखा है। आज जो आपका समय है, वही मेरा भी समय है। मैं भी उसी वातावरण में सांस ले रही हूँ, जिसमें आज का कोई युवा साहित्यकार सांस ले रहा है। आज साहित्य में एक साथ कई पीढ़ियाँ सक्रिय हैं, मैं पिछली पीढ़ी का होकर भी आज जो कहानी लिखती हूँ, वह उतनी ही आधुनिक हैं।"

'आधुनिकताबोध' आधुनिक और बोध दो शब्दों के योग से बना है। मानक हिन्दी कोश के अनुसार, 'आधुनिकता' शब्द का अर्थ है, "थोड़े समय से प्रचलन में या अस्तित्व में आया हुआ ; जिस पर वर्तमानकाल की धारणाओं की छाप पड़ी हुई है।" 'बोध' शब्द का अर्थ है, 'ज्ञान', 'जानकारी', 'भ्रम या अज्ञान का अभाव'।

आधुनिकता की परिभाषाएँ

एम.रोजर के अनुसार, " Modernization is a process by which individuals change from traditional way of life to a more complex, technologically advanced and rapidly changing style of life."

डॉ.नगेंद्र – " आधुनिक दृष्टि परंपरा को प्रवाह के रुप में स्वीकार करती है, जो निरंतर अग्रसर रहती है और उसमें परिवर्तन अनिवार्य है – जीर्ण पुरातन का त्याग, संशोधन तथा पुनर्मूल्यांकन की पद्धति से नव नव रूपों के विकास की आकांक्षा वैचित्र्य और नवीनता के प्रति आकर्षण आधुनिकता के सहज अंग हैं। अतः रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह और नवजीवन के विकास के लिए प्रयोग के प्रति आग्रह यहाँ अनिवार्य है।"

"आधुनिकता का सीधा संबंध समय की सुई से जुड़ता है जहाँ समाज में पसरी बैठी अतीत की हज़ारों साल पुरानी मान्यताएँ जीवन को संचालित कर रही होती हैं। उनसे मुक्त हुए बिना हमारा आधुनिकताबोध बेमानी है।"

कमलकुमार के कथासाहित्य में आधुनिकताबोध

कमलकुमार द्वारा सृजित पात्र सामाजिक, धार्मिक, नैतिक मूल्यों का निराकरण करके अपने मनोनुकूल रीति से आचरण करते हैं। कमलकुमार के कथासाहित्य में आनेवाली महिलाएँ आत्मनिर्भर और स्वावलंबी हैं। पारंपरिक पितृसत्तात्मक मान्यताएँ उनको स्वीकार्य नहीं हैं। उनके नारी पात्र समाज द्वारा निर्मित मूल्यों को चुनौती देते हैं। अपनी स्वतंत्रता में बाधा डालनेवाले तत्वों का निराकरण करने का साहस दिखाते हैं। अपने पर हो रहे शोषण को वे मौन होकर नहीं सहते। शोषण का विरोध करने में वे कभी नहीं हिचकिचाते। अपने अधिकारों के प्रति वे जागरूक हैं। उन्हें धर्म का भय नहीं है। उनको इसका एहसास है कि ये नियम या प्रतिबंध धर्म ने नहीं, धर्म के नाम पर पितृसत्तात्मक व्यवस्था के समर्थकों ने बनाए हैं। शिक्षा के कारण नारी में आत्मविश्वास बढ़ गया है और वे तर्कबद्ध रीति से सोचने भी लगी हैं। कमल कुमार के कथासाहित्य में आनेवाली स्त्रियाँ दुर्बल व्यक्तित्व की नहीं हैं। वे किसी भी परिवेश से जुड़ी हों, शिक्षित हों या अशिक्षित हों, पर अपनी सोच और आचरण में आधुनिकता का परिचय देती हैं। 'पासवर्ड' की प्रोफेसर से लेकर 'के नाम है थारो?' कहानी की स्वांगी तक हर नारी अपने व्यक्तित्व के भिन्न पहलुओं के दर्शन कराती है। पासवर्ड की नायिका विवाहेतर संबंधों की अस्थिरता को जानकर भी उस वर्तमान के सुख को भोगने के लिए उस संबंध में इन्वोल्व है तो 'के नाम है थारो?" की स्वांगी विधवा जीवन की व्यथा और शोषण से तम्ग आकर एक क्रांतिकारी निर्णय ले लेती है, जो उसके समाज को एक चेतावनी है। 'पासवर्ड' केवल अपने विषयवस्तु के कारण नहीं, बल्कि अपनी नयी शैली के कारण भी चौंकानीवाली रचना है। अशिक्षित स्वांगी धैर्य से अपने प्रेमी के साथ पुनर्विवाह करके नए सिरे से जीवन शुरु करने का निर्णय सुनाकर अपनी ज़िंदगी संवार लेती है। समाज , नैतिक या धार्मिक मूल्यों के बारे में वह सोचती तक नहीं। एक प्रकार से नारी मुक्ति का पहला कदम वह अपने गाँव में उठाकर अपनी तरह की असंख्य महिलाओं की अंतरंग को प्रकट करती है। राजेश्वर वसिष्ठ के अनुसार, "कमलकुमार नारी सशक्तिकरण से जुड़ी लेखिका हैं। वे नारी को उनकी रूढ़िवादी रूप से निकालकर नई ज़मीन देने की पक्षधर रही हैं।"

कमल कुमार की बहुत सारी कहानियाँ कल्चरल शॉक देनेवाली हैं। 'जंगल' कहानी की सुमन का चरित्र का विकास एक नये स्वर को लेकर उभरा है। एक रईस परिवार की लड़की सुमन समाज की रूढ़िगत मान्यताओं को जान बूझकर तोड़कर स्वच्छंद जीवन बितानेवाली है। उसके लिए कोई नैतिक या धार्मिक मूल्य मायने नहीं रखते। कहानी में बिना माँ की बेटी का स्वच्छंद आचरण, उसकी जीवन शैली, उसका विघटित परिवार, सिंगल पेरेंट होने का कष्ट, समाज की वक्र दृष्टि, इस तरह के

चरित्रहीन आचरण से पैदा हुए बच्चों की मनःस्थिति, उनकी परवरिश, माता-पिता के प्रति उनकी भावना आदि का लेखिका ने अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया है। अपने कथासाहित्य में चित्रित ऐसे पात्रों के बारे में टिप्पणी करते हुए कमलकुमारजी कहती हैं, इसका कारण संयुक्त परिवार का टूटना है। भारतीय परिवार की मूलभूत संरचना संयुक्त परिवार की थी। कमलकुमारजी के शब्दों में, " आर्थिक, सामाजिक तनाव, औद्योगीकरण, शहरीकरण, व्यक्तिवाद, वैयक्तिक स्वतंत्रता, पश्चिमी प्रभाव और आधुनिकता की आँधी में संयुक्त परिवार तो टूटे ही, एकल परिवार भी तनाव, टकराहट, संबंधों की कड़वाहट और अहंकार तथा स्वार्थ की अंधी दौड़ में बिखरने लगे। अधैर्य, स्वार्थ, असहनशीलता और पश्चिम का अंधानुकरण भी परिवारों के टूटने के कारण थे। कारण जो भी हो, इसका सबसे प्रतिकूल प्रभाव बच्चों पर पड़ा।" कमलकुमारजी द्वारा देखी हुई परिस्थितियों की परिणति उनके कथासाहित्य में देखी जा सकती है।

'फासिल' कहानी की गार्गी रिसर्च करने की इच्छुक होकर भी उसे पूरा नहीं कर पाती। भारतीय परिवार में लड़की की आकांक्षाओं के लिए कोई मूल्य न देकर उसकी शादी कर दी जाती है। गार्गी की शादी भी इसी तरह हुई थी। अपनी शादी के बीस सालों के बाद गार्गी अपनी इस महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए, फिर से रिसर्च करने के लिए घर छोड़कर बाहर आ जाती है। गृहत्याग करके अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निकल पड़ने के बारे में सांप्रदायिक समाज में सोचना भी गलत है। पर गार्गी बिना किसी हिचक के अपने इच्छित मार्ग पर अग्रसर होती है। कमलकुमार के सारे पात्र समाज से लिए हुए, यथार्थ की भावभूमि पर चित्रित पात्र हैं। स्त्री अभी समाज की मुख्यवाहिनी में न आकर हाशिए पर ही है। कमलकुमार जी ने एक साक्षात्कार में इस स्थिति पर अपनी राय इस तरह प्रकट की है- " जिस दिन एक औरत निर्णय लेने की स्थिति में आएगी, फिर चाहे राजनैतिक फैसला हो, चाहे ऐच्छिक फैसला हो, या घर का हो, तब वह हाशिए पर नहीं होगी। आज औरत कमाती हैं, सब कुछ करती है, पर अपना फैसला नहीं ले सकती।"

'वैलेंटाइन डे' कहानी के डॉक्टर अपने असफल प्रेम के कारण अपनी पत्नी से सहज संबंध स्थापित नहीं कर पाता। वह एक डॉक्टर से शादी करना चाहता था, पर पिता की मर्जी के अनुसार एक साधारण लड़की से उसे शादी करनी पड़ी। उसकी पत्नी उसका सब आचरण मौन होकर सहन करती है। जब उनके जुड़वा बेटे पैदा हुए, तो पत्नी ने उन बच्चों को उसकी प्रेयसी के नाम पर जुबिन और असद रखा था। बच्चों के सही नाम से उन्हें बुलाने के लिए कहने पर वह पति से साहस के साथ कहती है – " आप उस दिन मेरे साथ नहीं थे। आप जुबैदा के साथ थे।" अपने पति के व्यवहार का विरोध न करनेवाली,

आज्ञाकारी सति के मुँह से निकली बातें कितनी मार्मिक हैं। बहुत दिनों से उसके अंतर्मन में उबल रही लावा इस तरह एकाएक विस्फोटित हो जाती है। महिलाएँ अपनी सारी पीड़ा और चिंताओं को मन के शांत सागर में दबाकर बाहर से बिल्कुल शांत दिखती हैं। परंतु वास्तविकता इससे अलग ही है।

कमलकुमार के कथासाहित्य में आनेवाली महिलाएँ ज़्यादातर आर्थिक रूप से स्वतंत्र उच्च मध्यम वर्ग की हैं। वे खुद कमाती है और आधुनिक शैली का जीवन व्यतीत करती हैं। इस संदर्भ में 'करोड़पति' कहानी उल्लेखनीय है। इस कहानी की स्त्री विवाहोपरांत पारिवारिक झंझटों में पड़कर अपने लिए समय नहीं दे पाती। अपने छोटे से घर में अपनी सारी आकांक्षाओं दबाकर बच्चों के जीवन को सजाने की कोशिश में लगी रहती है। उसका बेटा पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करता है। बेटी की शादी हो जाती है। अब स्त्री को लगता है कि अपने लिए अब जीवन जीना है। पर उसका पति पैसे खर्च करने के पक्ष में नहीं है। अपने जीवन काल में उसने सफलतापूर्वक बच्चों की ज़िम्मेदारी निभायी है, अब उसका बैंक बैलेन्स भी अच्छा है। दो चार साइट भी खरीद चुका है। पर अपनी पत्नी की इच्छाओं की पूर्ति के लिए पैसे खर्च करना उसे व्यर्थ लगता है। पत्नी कहीं घूमने की इच्छा प्रकट करती है, घर के लिए सजावट की सामग्रियाँ खरीदना चाहती है। पर हर बात में पति उसे टोकता रहता है। इससे स्त्री का मन विद्रोह करने लगता है। वह अपनी सोने की अंगूठी बेचकर महंगी डिनर सेट खरीदती है। कंगन बेचकर घर के लिए फर्नीचर खरीदती है और बदरीनाथ यात्रा के लिए अकेली जाने को तत्पर होती है। घर के लिए नौकरानी रख लेती है। उसके इस हठात परिवर्तन से पति आश्चर्यचकित हो जाता है और घर की सजावट के लिए सोना बेचना उन्हें सर्वथा मान्य नहीं है। वह अपनी पत्नी के इसके लिए टोकता है तो पत्नी बहुत ही आत्मविश्वास से जवाब देती हैं – " ये गहने मेरा स्त्रीधन है। इस पर मेरा हक है। यों ता घर-ज़मीन पर भी मेरा हक है। पर तुम नहीं दोगे। कोर्ट तो नहीं जाऊँगी न। हाँ, जो मेरा है उसे तो अपनी मर्ज़ी से इस्तेमाल कर सकती हूँ। तुम्हारी इज़ाज़त भी नहीं चाहिए ।" यह है सोच की आधुनिकता।

'कुकुज नेस्ट' कहानी ट्रेन्सजेंडर लोगों पर आधारित है। ऐसे लोग समाज की घृणा का पात्र बनकर बहुत घिनौने जीवन बिताने के लिए मजबूर होते हैं। लोग उनकी ओर तिरस्कार की नज़रों से देखते हैं। पर इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने उनके जीवन को बारीकी से वर्णित किया है। लेखिका कमलकुमार जी अपनी लेखन प्रक्रिया के बारे में यों कहती हैं- " मैं बहुत धीमी और क्षीण ध्वनियाँ सुन लेती हूँ, पत्तों की सरसराहट, धीमी हवा का दोलन, बारिश की बूँदों की थाप, सूखे पत्तों की मर्मर···।" ऐसे संवेदनशील रचनाकार ही वास्तव में यथार्थ का सटीक वर्णन कर सकता है और समसामयिक भी होता है।

कहानी में उन लोगों के प्रति तिरस्कार की जगह सहानुभूति दर्शित की गयी है। लेखिका ने उन्हीं की बातों में यह बात कहलवायी है, " हमारा तो जन्म भी धिक्कार है और मौत भी। कौन ऐसा है, जो खुशी से यह सब करेगा।" हिजडों के जीवन की अनकही बातों पर, उनके जीवन पर काफी शोध करके लिखी यह कहानी उनके संकष्ट और मानसिक वेदनाओं पर प्रकाश डालती है। तिरस्कार के बदले में सहानुभूति जताकर उन्हें भी आम लोगों की तरह देखना भी आधुनिकता है। हाशिये के लोगों की वेदना को वाणी देना आधुनिकता की प्रमुख पहचान है।

'धारावी' कहानी का नायक अपनी प्रेमिका धारावी के बारे में यह सोचता है, " ऐ हेट वुमन एज ए वाइफ। पत्नी बनते ही उसका पूरा मेटामोर्फासिस हो जाता है। वह ऑक्टोपस में बदल जाती है। अपने कई-कई हाथों पंजों से आदमी को दबोच लेती है और उसे लाश बना देती है।" आधुनिक व्यक्ति केवल सुखापेक्षी है। परिवार की ज़िम्मेदारी और संबंधों को निभाना स्वीकार्य नहीं है। "वास्तव में सच है कि अच्छा पति अच्छा प्रेमी नहीं हो सकता और अच्छा प्रेमी अच्छा पति नहीं हो सकता।" इस विचार की परिणति इस कहानी में देख सकते हैं।

'खोखल' कहानी की नायिका अपने पति के आचरणों से तीव्र रूप से असंतुष्ट है। मध्यमवर्ग की नायिका पति के ऐशो आराम से भरे जीवन की निरर्थकता देखकर उदास होती है। भीड़ में रहते हुए, अपने परिवार – पति, बच्चों के साथ रहते हुए भी वह अपने आपको अकेली महसूस करती है। तनाव के कारण उसका नर्वस ब्रेकडाउन हो जाता है। उसके पागलों जैसी हरकत देखकर उसकी बेटी अपने पापा दिनेश से कहती है, " देखो पापा! मम्मी बुआ माँ बन गईं। मैंने पहले ही कहा था, मम्मी ने अलमारी से किताबें उठा-उठाकर नीचे पटक दी है और चिल्लाती जा रही हैं। खोखल! खोखल !! मम्मी का नर्वस ब्रेकडाउन हो गया है।" समाज तो नारी की विक्षिप्त अवस्था को देखता है, उसकी हंसी उड़ाता है, पर उसके लिए कारणीभूत स्थितियों के बारे में कभी नहीं सोचता। समाज की बात तो दूर, पति अथवा घर के अन्य सदस्य भी उस बारे में नहीं सोचते या समझने की कोशिश नहीं करते। हमेशा समाज नारी को लांछित करने की ताक में रहता है। वह स्त्री को सांप्रदायिकता के आवरण में ही देखना चाहता है। हमेशा उससे त्याग, बलिदान, प्रेम, सात्विक व्यवहार की अपेक्षा की जाती है।

'टैडी बेयर' कहानी की गीता सांप्रदायिक परिवार की होकर भी आधुनिक जीवन शैली रखनेवाली है। वह पाश्चात्य जीवनशैली से इस कदर प्रभावित है कि वह पश्चिमी आधुनिकता के अंधानुकरण में अपना नाम भी बदलकर ग्रेटा रख लेती है। देश को छोड़कर विदेश में जाकर वहाँ पर किसी अन्य देशीय व्यक्ति के संबंध में इन्वाल्व होती है। वह अपने लिए आए हुए मंगेतर अखिलेश

का अपने इस आधुनिकता और स्वच्छंदता के मद में तिरस्कार करती है। अपने विदेशी प्रेमी जॉन द्वारा तिरस्कृत होकर वह मानसिक वेदना का शिकार बनती है। उसकी भ्रामक कल्पनाएँ नष्ट होती हैं।

आधुनिक व्यक्ति अनेक मानसिक और पारिवारिक समस्याओं से ग्रस्त है। 'चौराहा' कहानी के नायक को चौराहे पर घूम रहे अनाथ व्यक्ति में अपने पिता नज़र आते हैं। पर अपनी भावनाओं को वह खुद तक ही सीमित रखता है। उसे अच्छी तरह से मालूम है कि पत्नी से कहने पर पत्नी करुणा उसकी भावनाओं की कद्र नहीं करती। वह कार में अनमना बैठा रहता है। इस बारे में पत्नी के पूछने पर उसका उत्तर कितना मार्मिक है, " तुम्हारे साथ सिर्फ सुख और सुविधाएँ ही शेयर की जा सकती हैं, प्रोब्लम नहीं।" आधुनिककाल में पति-पत्नी के रिश्तों में पड़ी दरार को यह वाक्य अत्यंत सहज रूप में सामने रखता है।

आधुनिकता के इस दौर में पति और पत्नी को एक दूसरे जो मानसिक आधार मिलना चाहिए, वह प्राप्त नहीं होता। 'चौराहा' कहानी का नायक अत्यंत उदास होकर अपनी पत्नी से कहता है, " मतलब यह कि करुणा एक जज़्बा होता है। करुणा का अर्थ होता है भीतर की आर्द्रता जो किसी के दुःख और कष्ट को देखकर पिघलती है। करुण व्यक्ति त्रस्त के प्रति संवेदनशील होता है।"

निष्कर्ष:

हम कह सकते हैं कि कमलकुमार ने अपनी कहानी और उपन्यासों में आधुनिकता के मोह में रंगे लोगों का चित्रण बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से किया है। आधुनिकता के नाम पर आचरित स्वच्छंदता, नैतिक मूल्यों का पतन, धार्मिक पद्धतियों की अवहेलना, बड़े-बूढ़ों के प्रति आदर सम्मान न रहना, आधुनिकता के कारण पनपे हुए 'इगो' से संबंधों का बिगडना, उससे उपजे एकाकीपन और अजनबीपन, अनाथबोध, स्वार्थपरता आदि सभी भावनाओं का हृदयस्पर्शी चित्रण कमल कुमार के कथासाहित्य के मुख्य विषय है। सांप्रदायिकता की परिधि से धीरे धीरे बाहर आकर आधुनिक जीवनशैली की ओर मुखातिब हो रहे भारतीय परिवेश का यथार्थ चित्रण कमल कुमार के कथासाहित्य में देखने को मिलता है। लेखिका स्वयं कहती हैं, " मैंने आम आदमी के सरोकारों को अपने साहित्य सृजन का केंद्रीय तत्व मानती हूँ।" विभिन्न परिस्थितियों, वातावरण में पले-बड़े लोगों की मानसिकता का चित्रण कमलकुमार ने अत्यंत सहज रूप से चित्रित किया है। कमल कुमार का साहित्य किसी प्रकार के आवरण में छुपे हुए भावोत्कर्ष नहीं है। जो कहना है, उसे लेखिका निड़र होकर अभिव्यक्त करती हैं। साहित्य में अश्लीलता के प्रश्न पर लेखिका की राय है, " अश्लीलता एक भ्रामक

दृष्टिकोण है। ⋯ अश्लीलता सामाजिक सोच का नतीज़ा है। यह सोच पर्दे के पीछे से सब कुछ स्वीकार करती है, लेकिन पर्दे के बाहर आने पर चीखने-चिल्लाने लगती है।" कमलकुमार के साहित्य में, कमल कुमार की भाषा में, शैली में आधुनिकता दृष्टिगोचर होती है। उनके कथासाहित्य में उन्होंने आधुनिक शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। हिन्दी में अन्य भाषा के शब्दों को न लेने का दुराग्रह उनको नहीं है। प्रचलित अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग ने उनकी भाषा को अत्यंत सहज बनाया है। उनकी कहानियों और उपन्यासों के शीर्षक इस बात का प्रमाण देते हैं। 'पासवर्ड', 'हैमबर्गर', 'कुकुज़ नेस्ट', 'टेडी बेर' आदि उपन्यास इसके उदाहरण है। कमलकुमार ने 'पासवर्ड' उपन्यास को ई-मेल शैली में प्रस्तुत किया है जो शैली की दृष्टि से सर्वथा नवीन प्रयोग है।

यह सर्वमान्य बात है कि जो लेखक युगानुरूप है, वर्तमान काल के ज्वलंत विषयों पर लिखता है, वह पाठक के साथ आसानी से कनेक्ट होता है। लेखक की सफलता की कुंजी यही है। युगानुरूप होना लेखक का सबसे बड़ा गुण है। लेखिका कमलकुमार इस दृष्टि से अत्यंत सफल हैं। उनके खुद की राय में उनकी रचनाओं को समाजोपयोगी कहने से भी प्रासंगिक कहना अत्यंत उचित होगा। उन्हें अपने कथासाहित्य में समाज के सच्चाइयों को अभिव्यक्त करने में कोई झिझक नहीं है। रचनाकारों में जो निर्भीक व्यक्तित्व की अपेक्षा की जाती है, वह कमलकुमार में है। उनकी रचनाओं का कैनवास अत्यंत विशाल है। बहुत बार उनकी रचनाओं के बारे में विवाद भी खड़े हुए। अपनी कहानी 'सखियाँ' पर उठे विवाद के बारे में बताते हुए कमलकुमार जी यह स्वीकरती हैं, " मेरी एक कहानी है सखियाँ, उसे लेकर काफी विवाद हुआ। लेकिन मुझमें साहस है यह कहने और स्वीकार करने का कि यह भी समाज का सत्य है और आप इसे नकार नहीं सकते।" अत्यंत व्यापक धरातल पर उन्होंने जीवन के विविध पक्षों को चित्रित किया है। आधुनिक जीवन शैली का सुख, आधुनिक जीवन की त्रासदी, आधुनिक समाज की समस्याएँ, अजनबीपन, विस्थापन, मोहभंग, आधुनिक जीवन शैली के कारण उपजी शारीरिक और मानसिक अस्वस्थताएँ, समाज के साथ संघर्ष, सामाजिक जीवन से कटकर व्यक्तिगत सुख को परमोच्चता प्रदान करने की मनःस्थिति, स्वार्थपरता, नैतिक और पारिवारिक मूल्यों का विघटन, स्त्री स्वतंत्रता का नया आयाम आदि सभी विषय कमलकुमार की लेखनी का संस्पर्श पाकर अत्यंत मार्मिक ढ़ंग से उभरकर आए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

[1] कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कमलकुमार जी से विवेक मिश्र की बातचीत, कानपुर पृष्ठ संख्या १३

[2]कथाकार उषा प्रियंवदा- डॉ.सुभाष पवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर

[3] डॉ. नगेंद्र, आस्था के चरण, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६८, पृष्ठ २१८

[4] हिन्दी आधुनिकता : एक पुनर्विचार, संपादक – अभयकुमार दुबे, पृष्ठ संख्या २२

[5] कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से राजेश्वर वशिष्ठ जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ३६

[6] कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से संगीता गुप्ता जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या २५

[7] कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से जूड़ी पिंटो जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ८९

[8] दस प्रतिनिधि कहानियाँ – वैलेन्टाइन डे – कमलकुमार – पृष्ठ संख्या ६७

[9] मदर मेरी और अन्य कहानियाँ – करोड़पति - कमलकुमार- पृष्ठ संख्या १०५

[1]० कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से विवेक मिश्र जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या १०

[11]मदर मेरी और अन्य कहानियाँ – कुकुजनेस्ट - कमलकुमार- पृष्ठ संख्या ६८

[12] दस प्रतिनिधि कहानियाँ – धारावी - कमल कुमार – पृष्ठ संख्या १०१

[13]कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से रेणुका नायर जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ६०

[14] दस प्रतिनिधि कहानियाँ – खोखल – कमलकुमार – पृष्ठ संख्या ८८

[15]दस प्रतिनिधि कहानियाँ – चौराहा – कमल कुमार – पृष्ठ संख्या १०९

[16] दस प्रतिनिधि कहानियाँ- चौराहा – कमलकुमार -पृष्ठ संख्या १०९

[17]कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से डॉ.गोरख नाथ तिवारी जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ५२

[18]कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से डॉ.गोरखनाथ तिवारी जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ५३

[19] कमल कुमार: साक्षात्कार आईने में, अमन प्रकाशन, कानपुर कमलकुमार जी से राजेश्वर वशिष्ठ जी की बातचीत, पृष्ठ संख्या ३९

****